COURSE NAME – B.Ed. 2nd year SESSION – 2020-22

SUBJECT – understanding the self

TOPIC NAME – स्व – अवधारणा

DATE – 21/01/2022

५

स्व - अवधारणा (self-concept)

स्व - एक आत्मअवधारणा इसे स्व निर्माण, आत्म - पहचान, स्व - संरचना आदि स्वयं के बारे में मान्यताओं का एक संग्रह है आमतौर पर आत्म अवधारणा "मैं कौन हूँ" के जवाब का प्रतीक है। आत्म - अवधारणा आत्म - सम्मान से भी भिन्न होती है : आत्म - अवधारणा किसी के स्वयं का संज्ञानात्मक या वर्णनात्मक घटक है

जैसे - "मैं एक तेज धावक हूँ"

जबकि आत्म सम्मान मूल्यांकन और राय है

जैसे "मैं तेज धावक होने के बारे में अच्छा महसूस करता हूँ"।

अर्थात 'स्व' का मतलब होता है स्वयं की पहचान, स्वयं का व्यक्तित्व अर्थात जो कुछ कोई व्यक्ति है। इस तरह 'स्व' किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।

सर्वप्रथम हम स्वयं को जानें, हम में से अधिकांश तो स्वयं की पहचान नहीं रखते है। यदि जानते है तो ठीक रूप से व्यवहार नहीं कर पाते है। स्व अवधारणा मैं कौन हूँ। अपने बारे में हमारे विचारों और भावनाओं के सभी

को शामिल , व्यक्तिगत रूप से सामाजिक रूप से दायरे में व्यक्तिगत ज्ञान है। स्व अवधारणा में हम कैसे व्यवहार करते है, हमारे क्षमताओं के हमारे ज्ञान और हमारे व्यक्तिगत विशेषताओं में शामिल है।

वैयक्तिक, सामाजिक व वृत्तिक अस्मिता की अवधारणा :-

वैयक्तिक अस्मिता :- वैयक्तिक अस्मिता एक खोज है एक दृष्टि है - और एक प्रवृत्ति को आत्मसात करना है। यह प्रवृत्ति हमें अपनी और दूसरों की छवि प्रदान करती है। इस मानक दृष्टिकोण के माध्यम से ही हम दूसरो से संबंध बनाते है

संगठनात्मक कार्यों के अलावा भू-भाग के आधार पर व्यक्ति अपने आपको अन्य लोगों से अलग विशिष्ट व्यक्ति के रूप में समझता है और व्यक्ति में 'वैयक्तिक अस्मिता' की अनुभूति विकसित होती है। एक विशिष्ट भू-भाग पर अधिकार होने के कारण व्यक्ति आत्मसम्मान का भी अनुभव करता है। भूभागीयता निम्न महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करती है

पहचान शब्द का संबंध एक जैसे गुणों से है जिसके आधार पर लोग स्वयं को अथवा अन्य लोग कुछ लोगों को इनके

विशेषताओं जैसे सजातीय पहचान के कारण किसी समूह विशेष अथवा वर्ग विशेष से जोड़ देते है, इस शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के समूहों, वर्गों, क्षेत्रों और संस्थानों तथा केवल व्यक्तियों के लिए किया जा सकता है।

सामाजिक अस्मिता :—

सामाजिक अस्मिता एक व्यक्ति के स्वयं अवधारणा का हिस्सा है। वह प्रासंगिक सामाजिक समूह के कथित सदस्यता से प्राप्त होता है। सामाजिक पहचान सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जो कुछ अंतर-समूह व्यवहार की पूर्व सूचना दे सकता है। सामाजिक वर्गीकरण आम तौर पर एक ही समूह में लोगों की समानता और अलग-अलग समूहों में लोगों के बीच मतभेदों पर जोर देने के परिणाम है।

सामाजिक पहचान एक समूह के सदस्य के रूप में पहचान की प्रक्रिया है। सामाजिक रूप से एक समूह के साथ ही पहचान करने का तरीका है।

7.

प्रतिक अस्मिता – (प्रोफेशनल पेशेवर) प्रतिक

अस्मिता किसी व्यवसाय का एक ऐसा सदस्य होता है जिसे विशिष्ट शैक्षणिक प्रशिक्षण के आधार पर चुना जाता है। जो अपनी बुद्धि का उपयोग कर आय कमाते है।

जैसे – Doctor, Engineer, Loyer ये अपनी सेवा प्रदान कर आय कमाते है

पारम्परिक रूप से प्रोफेशनल शब्द का मतलब है वह व्यक्ति जिसने किसी व्यवसायिक क्षेत्र में एक डिग्री प्राप्त की है।

सीधे या साधारण शब्दों में हम कहें तो वृति का अर्थ, उद्देश्य, महत्व केवल एक ही होता है और इसका सम्बन्ध जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक गतिविधियों से ही लगाया जाता है और वृतिक एक मात्र शब्द न होकर एक मार्ग है और एक ऐसा मार्ग है जोकि व्यक्ति को विकासशील तथा समृद्धशील जीवन की ओर अग्रसर करता है। अपनी भौतिकवादी जीवन वृति को सफल बनाने के लिए व्यक्ति को अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में अपनी 'मनोवृति' को उसी के अनुसार विकसित करना होता है। यहाँ व्यक्ति की मनोवृति उसे अपने जीवन के विशेष लक्ष्य जैसे – चिकित्सक, वकील, अधिकारी, अधिवक्ता तथा व्यवसायी आदि बनने की ओर अग्रसर करती है

इस प्रकार वृत्ति एक ऐसा दर्शन है जो व्यक्ति को अपने जीवन के आरम्भिक समय में जीवन की राह दिखाता है तथा यहाँ वह अपने शिक्षक की सहायता से उस राह पर चलकर उसे प्राप्त करता है।

वृत्तिक के उद्देश्य

वृत्तिक के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है -

1. जीवन की मूलभूत आवश्यकता पूर्ण करना
2. सहायक आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
3. सामाजिक उत्तरदायित्व पूर्ण करना।
4. राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व निभाना
5. स्वयं को सन्तुष्ट करना

उपरोक्त अध्ययन के उपरान्त हम कह सकते है कि मनुष्य एक सामाजिक तथा राष्ट्रीय नागरिक होता है। अतः उसे इन उत्तरदायित्वों का पूर्ण रूप से पालन करना होता है।